ISSN 2581-9917

चश्मे बदूर

एक रोज़ सोशल मीडिया पर एक तस्वीर तैरती हुई देखी। उस तस्वीर में तीन इंसानी स्केच बनाए गए थे। एक लड़की और लड़का साथ खड़े थे और थोड़ी दूरी पर एक और लड़की का स्केच बना हुआ था। ऊपर अंग्रेज़ी में लिखा था कि असली खुशी अपने 'एक्स' (पुरुष मित्र) को किसी 'बदसूरत' के साथ देखने पर मिलती है। इस पोस्ट को हज़ारों लाइक्स मिले थे। साथ ही साथ इसे ढेरों बार साझा (शेयर) भी किया गया था। कमेंट्स भी काफी थे। यह वास्तव में हमारी मानसिकता की तरफ़ इशारा करता है। हम इसी युग में जी रहे हैं जहाँ इस तरह के सुंदरता के पैमाने हमें चौंकाते नहीं हैं। हमारे बीच सुंदर और कुरूप के मापदंड तय हैं। यह आज से नहीं है, बल्कि हजारों साल से ये हमारे समाज और दिमाग में मौजूद हैं।

खूबसूरती और बदसूरती ये दो पैमाने हैं, जिन्हें हर रविवार को अख़बारों में सुंदर दुल्हनों और दुल्हों की ख्वाहिश में देखा जा सकता है। कई अदाकाराएँ टीवी पर आकर यह सीधे तौर पर बतलाती (जतलाती) हैं कि आपका गहरा एशियाई रंग बहुत ख़राब है और इसे फलां क्रीम लगाकर गोरा किया जा सकता है। गोरा रंग मतलब सुंदरता। अगर आपकी त्वचा का रंग गहरा है, तो यह आपकी सुंदरता नहीं है, बल्कि यह बीमारी की निशानी है। यह निष्कर्ष बहुत सारे क्रीम के विज्ञापनों ने निकाल लिया है। हम सब इन झांसों के शिकार हैं और खुद की खूबसूरती को दूसरों की नज़रों से हर पल मापते हैं।

गौर से देखने पर हम पाएंगे कि हमने खूबसूरत होने के पैमाने तय कर रखें हैं और जो इस पैमाने पर खरा नहीं उतरता उसे हम कई नामों से संबोधित करना शुरू भी कर देते हैं। लेकिन कभी इस बात के बारे में ठहर कर नहीं सोचते कि प्रकृति में हर आकार और रंग के लिए समान जगह है। क्या कभी आसमान में ज़मीन से दिखते हुए बादल एक रूप में देखे जा सकते हैं? क्या कोई दो पेड़ों का आकार या रंग कभी बिलकुल एक जैसा होते हुए पाया है? क्या मिट्टियाँ अलग रंग की नहीं हैं? प्रकृति को नज़दीक से बैठकर अपने में समा लेने की क्षमता का घटाव पिछले कुछ वर्षों में और गहरा हुआ है। हम एक बहुत असंतोष की ज़िंदगी के मालिक बन चुके हैं जो हर पल किसी दूसरे की ज़िंदगी में घुसना चाहता है। हुबहू किसी दूसरे की नक़ल बन जाना चाहते हैं और शायद यही वज़ह है कि खुद से ताल्लुक नहीं रख सकने की होड़ में इंसान सबसे आगे है।

बात खूबसूरती की चली है तो हिंदी साहित्य के कहानी सम्राट प्रेमचंद की एक कहानी की बात ज़रूर कर लेनी चाहिए। उन्होंने अपनी कलम से कई बेहतरीन कहानियों को रचा है, जो आज भी चाव से पाठकों द्वारा पढ़ी जाती हैं। ऐसी ही उनकी कहानी 'आभूषण' है। यह कहानी महज़ चार चरित्रों के माध्यम से सुंदरता के मायने बताते चलती है। लेकिन हमें इसे गौर से समझना होगा और उससे पहले कहानी को कई मर्तबा पढ़ लेना ठीक होगा।

कहानी में, शीतला नाम की शादीशुदा महिला अपने ही गाँव के ताल्लुकेदार के यहाँ उनकी नवविवाहिता पत्नी को देखने जाती है और उसके द्वारा पहने गए गहनों पर सम्मोहित हो जाती है। घर आकर वह अपने पति से गहनों की खातिर झगड़ा करती है और पति आहत होकर कमाकर गहने बनवाने के लिए घर छोड़ देता है। इस बीच नवविवाहिता जिसका नाम मंगला है, वह अपने को खूबसूरत न पाकर पति के व्यवहार के चलते घर छोड़कर चली जाती है। मंगला का पति शीतला के पति की गैर-हाज़री में उसका ख़याल रखता है और उसे गहने बनवाकर देता है। शीतला रूप की रानी है, पर दूसरी तरफ आभूषणों के लिए दीवानी भी है। कहानी के अंत में शीतला का पति बेहद दुर्बल और दयनीय अवस्था में घर लौटता है। फिर भी शीतला उसका ध्यान नहीं रखती बल्कि अपने गहनों में खोई रहती है। अंत में उसका पति मर जाता है। शीतला की वास्तविक कुरूपता देखकर मंगला के पति को अपनी पत्नी के साथ किए बर्ताव का अफ़सोस होता

है। मंगला के बारे में लेखक काफी कुछ लिखता है और बताता है –

"संसार कहता है कि गुण के सामने रूप की कोई हस्ती नहीं। हमारे नीतिशास्त्र के आचार्यों का भी यही कथन है पर वास्तव में यह कितना भ्रममूलक है! कुँवर सुरेश सिंह की नववधू मंगलाकुमारी गृह-कार्य में निपुण पति के इशारे पर प्राण देनेवाली अत्यंत विचारशीला मधुरभाषिणी और धर्म-भीरु स्त्री थी पर सौंदर्यविहीन होने के कारण पति की आँखों में काँटे के समान खटकती थी।"

लेखक शीतला के चरित्र का भी कई जगह विवरण देता है। जैसे–

"...मंगला के आभूषणों को पहन कर शीतला प्रसन्न हो रही है। उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ते। वह दिन भर आईने के सामने खड़ी रहती है। कभी केशों को सँवारती है, कभी सुरमा लगाती है। कुहरा फट गया है और निर्मल स्वच्छ चाँदनी निकल आयी है। वह घर का एक तिनका भी नहीं उठाती। उसके स्वभाव में एक विचित्र गर्व का संचार हो गया है।..."

दिलचस्प यह है कि यहाँ असली सुंदरता का महत्त्व समझाने के लिए लेखक ने दो स्त्रियों को ही चुना है। कोई आम पाठक इस कहानी को पढ़ेगा तो शीतला के बारे में वही धारणा बनाएगा जो कहानी में बयां है। मंगला के साथ हमदर्दी होगी और पाठक की सच्ची भावनाएं मंगला ले जाएगी, लेकिन शीतला के चरित्र की दुर्बलता के कारणों पर कहानी में कोई प्रकाश नहीं डाला गया है। क्यों किसी औरत के मन में गहनों के प्रति प्रेम है या फिर क्यों हर औरत सुंदर दिखना चाहती है, वह भी दूसरों के लिए, ऐसे सवालों पर आज के समय सोचने की विशेष ज़रूरत है। औरत पर हर समय सुंदर दिखने के दबाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन का काम शुरू हो चुका है। उम्मीद है इसके विश्लेषण से बहुत सी गुत्थियाँ भविष्य में सुलझेंगी।

रटे हुए संवादों में से एक संवाद मन की सुंदरता के बारे में भी है। यह मापदंड बुरा भी नहीं, लेकिन यह कोई अकेला ही तय पैमाना नहीं है। खूबसूरती किसी भी व्यक्ति के मन में, सोच में और व्यवहार से जुड़ी है। एक साथ सभी जीव जगत् के प्रति समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता की बात को हम अपने जीवन में कितना अमल में लाते हैं, यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है। उदाहरण के लिए जानवरों को बचाने की कोशिशों में बहुत से लोग आवाज़ बुलंद करते हैं पर वही लोग दूसरी तरफ चमड़े से बने पर्स, बेल्ट, सोफ़ा आदि के सामान भी खरीदते हैं। यह एक तरह की उपभोक्तावादी कुरूपता है। अपने लिए जिस परिवेश की हम खुद तमन्ना करते हैं पर उसी परिवेश में किसी दूसरे को बर्दाश्त भी नहीं कर पाते, तब यह हमारे चरित्र की दुर्बलता और असुंदरता ही है।

बातें तो बहुत सी हैं कहने की, पर एक ज़रूरी बात यह है कि आज हम जिस खूबसूरती को वास्तविक समझ रहे हैं दरअसल वह बाज़ार द्वारा निर्धारित है। बाज़ार हमारे जीवन के मूल्य तय करता है। उसका नियंत्रण घर के अंदर तक हो चुका है। ज़रूरतों के बगैर हमारे लालच को उसने बेहद बड़ा बना दिया है। हमारी नज़रों पर वही ऐनक लगी है, जो बाज़ार ने बनाकर हमें बेची है। इसलिए खुद से अपनी मुलाक़ात ज़रूरी हो गई है। खुद से मिलना मतलब एक अंतर्मन का मंथन, जहाँ व्यवस्थित सोच के अंकुर फूटें। संतुलित मानसिकता इसके लिए बेहद ज़रूरी है।

चश्मे बद्दूर का अर्थ बुरी नज़र को दूर करना या रखने से होता है। ये दो जोड़ी शब्द हमें आईना दिखाते हैं कि क्या हम खुद के मन को बुरी सोच या ख़यालों से दूर रखकर सुंदर हो पाते हैं या नही?

ज्योति
शोधार्थी,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।